आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 7 अंक : 06 फरवरी-2020 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

सशक्त भारत के निर्माण में जुटकर अपना योगदान करें

बंधुओ आज ही के दिन गणतंत्र व्यवस्था लागू करके देश में जनता की सरकार बनी। यह पावन दिवस तन, मन और धन से देश सेवा का संकल्प लेने का है। आओ, हम सब मिलकर एक नए और सशक्त भारत के निर्माण में जुटकर अपना योगदान करें। देश को आजाद करवाने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों का पुण्य स्मरण हमारी प्रेरणा का स्त्रोत है। उनका यह बलिदान व्यर्थ न हो, इसके लिए हमें देश की मजबूती और खुशहाली के लिए सचेष्ट रहकर कार्य करना है। टीम राजुवास के प्रयासों से वेटरनरी विश्वविद्यालय ने एक मजबूत नींव के साथ ख्यातनाम विश्वविद्यालय के रूप में अपनी पहचान बनाई है। विश्वविद्यालय के सुदृढ़ीकरण के लिए आगामी 10 वर्ष के लिए योजनाओं और कार्यक्रमों में विशेष अनुसंधान और पेटेंट, अर्न्तराष्ट्रीय सहभागिता बढ़ाने तथा सामाजिक सरोकार के कार्यों को प्राथमिकता से लागू किया जा रहा है। विश्वविद्यालय स्थापना के इस दशाब्दी वर्ष में पशु कल्याण और पशुपालकों में जागरूकता के लिए 12 नवीन कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। इसमें देशी गौवंश दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद केन्द्रों की स्थापना बीकानेर और नवानियां (उदयपुर) महाविद्यालयों में की गई है। दशाब्दी वर्ष में विश्वविद्यालय के सभी संस्थानों, इकाइयों के परिसरों को "ग्रीन–क्लीन प्लास्टिक फ्री" अभियान शुरू किया गया है। विश्वविद्यालय में नए मानव संसाधन निदेशालय की स्थापना की जाएगी। राज्य के समग्र पशु कल्याण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा गौशालाओं को गोद लेकर तकनीकी सुदृढ़ीकरण का कार्य भी शुरू किया जा रहा है। सभी पशुधन फार्मों में जैविक उत्पादन और उनके प्रमाणीकरण तथा पशुआहार में आत्म निर्भर बनाने के प्रयास शुरू किए गए हैं। पशुचिकित्सा शिक्षा के विद्यार्थियों में उद्यमिता कौशल विकास के लिए प्रत्येक महाविद्यालय में लाइव–स्टॉक इन्नोवेशन नॉलेज और एन्टरप्रेन्योरशिप स्किल प्रकोष्ठों का गठन किया गया है। विद्यार्थियों के व्यावसायिक उन्नयन के लिए लघु अवधि के सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय द्वारा शुरू किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के पशुधन समग्र कल्याण और विकास के लिए पशुपालन और सम्बद्ध विभागों से बेहतर समन्वय और कार्य के लिए एक नए फोरम के गठन को राज्य सरकार से सैद्धांतिक स्वीकृति मिल गई है। राज्य सरकार द्वारा राज्य का चौथे संघटक नए महाविद्यालय को जोधपुर में खोलने की सौगात प्रदान की है। राज्य का ई–गर्वनेन्स अवार्ड 2019 का सम्मान राजुवास को मिलना हमारे लिए गौरव की बात है। वेटरनरी विश्वविद्यालय को यू.जी.सी. द्वारा 12बी की मान्यता और वेटरनरी कॉलेज, नवानियां को वी.सी.आई. की प्रथम अनुसूची में शामिल किया जाना हमारी विशिष्ट उपलब्धि रही है। राज्य के 14 जिलों में स्थित वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्रों तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा विभिन्न जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में वर्ष 2018–19 में 1127 वैज्ञानिक पशुपालक शिविरों का आयोजन करके 34 हजार 866 पशुपालक और कृषकों को लाभान्वित किया गया है। हम सभी के मिले–जुले प्रयासों से देश में पशुचिकित्सा शिक्षा और पशुपालन सेवाओं में राजुवास के कदम तेजी से बढ़ेंगे। इसी विश्वास और उम्मीद के साथ आप सभी को एक बार पुनः गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई। जय हिन्द।

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

माननीय राज्यपाल, राजस्थान श्री कलराज मिश्र को विश्वविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय में गणतंत्र दिवस का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय में 71वें गणतंत्र–दिवस 2020 समारोह के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने ध्वजारोहण कर सलामी दी। समारोह में छात्र–छात्राओं द्वारा देश भक्ति से ओत–प्रोत संगीत और नृत्य के मनभावन कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। कुलपति प्रो. शर्मा ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सभी परीक्षाओं की मेरिट में अव्वल रहे 29 विद्यार्थियों, एन.सी.सी. में पदक विजेता 5 कैडेट्स 3 उत्कृष्ट शोधार्थियों और गोद लिए गांव डांईयां में कम्प्यूटर प्रशिक्षण में अव्वल रहे 3 विद्यार्थियों और विश्वविद्यालय एपेक्स सेन्टर के प्रभारी अधिकारी प्रो. अनिल कटारिया को सांभर झील में पक्षियों की त्रासदी में सबसे पहले रोग के कारणों का खुलासा किए जाने के लिए पुरस्कृत किया।

विख्यात ऊन उद्योग व भेड़ विकास के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय और राज. वूलन इन्डस्ट्रीज एसोसिएशन ने किया ऐतिहासिक करार

बीकानेर के विख्यात ऊन उद्योग और भेड़ों के चहुंमुखी विकास, ऊन उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार के लिए 10 जनवरी को एक ऐतिहासिक समझौता किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा और राजस्थान वूलन इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन के अध्यक्ष कमल कल्ला ने इस बाबत आपसी सहयोग व समन्वय से कार्य करने के लिए एक आपसी करार पर दस्तखत कर दस्तावेज एक दूसरे के सुपुर्द किए। इस समझौते के तहत भेड़ व ऊन विकास के लिए अनुसंधान और उसके विकास के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय संसाधनों का उपयोग, तकनीकी तथा प्रशिक्षण सुविधाएं मुहैय्या करवाएगा। भेडों के स्वास्थ्य, पोषण, उम्दा किस्म का ऊन उत्पादन और कारपेट निर्माण और प्रसंस्करण तथा भेडों के ऊन अपशिष्टों को खाद रूप में उपयोगिता जैसे कार्यों पर कार्य किया जाएगा। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि बीकानेर दूध और ऊन उत्पादन में अग्रणी है। वेटरनरी विश्वविद्यालय का प्रयास है कि इनके समुचित विकास और प्रोत्साहन के लिए पशुपालकों, उद्यमियों और व्यवसाइयों के साथ मिलकर कार्य किया जाए। आज के इस आपसी करार से एक नया अध्याय शुरू कर विश्वविद्यालय के ज्ञान और तकनीक का पूरा लाभ भेड पालकों व संस्थानों को मिल सकेगा। विश्वविद्यालय वैज्ञानिकों का दल जरूरतों का आंकलन कर आगे कार्य की रणनीति बनाकर यहां के मानव संसाधन का भी उपयोग सुनिश्चित करेगा। राजस्थान वूलन इन्डस्ट्रीज एसासिएशन के अध्यक्ष कमल कल्ला ने कहा कि वूलन यहां की हैरिटेज इन्डस्ट्री है जिसका प्रभाव समूचे क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर पड़ता है। इसके माध्यम से 50 हजार लोगों को रोजगार और 10 हजार करोड रूपये राशि के गलीचे निर्यात होते हैं। इस करार से भेड़ व ऊन क्रांति लाने में सफलता मिलेगी। डॉ. एस.पी. जोशी ने नाइट्रोजन युक्त ऊन के अपशिष्ट से खाद निर्माण की संभावनाओं पर विचार रखे। वेटरनरी विश्वविद्यालय की पी.एम.ई. निदेशक प्रो अंजु चाहर, विशेषाधिकारी प्रो. आर.के धूडिया, डॉ. गोविन्द सिंह, प्रो. राजीव जोशी, डॉ. एस.के. झीरवाल, डॉ. दिनेश जैन और इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन के प्रतिनिधि राजेश दुजारी, साजिद सुंलेमानी, गौरीशंकर सोमानी और सचिव जय सेठिया भी मौजूद रहे।

वेटरनरी विश्वविद्यालय और सहज (एन.जी.ओ.) में हुआ आपसी करार

पशुपालकों को नवीन तकनीक, ज्ञान और उद्यमिता विकास के लिए मिलकर कार्य करेंगे

पशुपालन में उद्यमिता विकास के लिए पशुचिकित्सा की नवीन तकनीक और ज्ञान को पशुपालकों तक पहुँचाने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय और सहज (सहज इन्क्यूलिसिव आपर्ट्यूनिटिज (इण्डिया प्रा. लि.) जयपुर ने 31 दिसम्बर को एक आपसी समझौते (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर किए। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा और सहज के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री विज्ञान गाड़ोदिया ने करार के कागजात एक दूसरे के सुपुर्द किए। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय और सहज संस्थान मिलकर पशुपालन की तकनीक और ज्ञान को पशुपालकों तक पहुँचाने का कार्य करेंगे। इससे किसान और पशुपालकों में उद्यमिता विकास को बढावा मिलेगा। इस अवसर पर पी.जी. आई.वी.ई.आर. की विभागाध्यक्ष प्रो. संजीता शर्मा, डॉ. रवि चौधरी एवं लाइजन ऑफिसर डॉ. गोविन्द सहाय गौतम भी मौजूद थे।

15 वीं अकादमिक परिषद् की बैठक संपन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय में स्थापित दुग्ध और पशुआहार व चारे की गुणवत्ता वाली उच्च प्रौद्योगिकी प्रयोगशालाओं को भारत सरकार के मानकों की मान्यता दिलवाई जाएगी। अर्न्तराष्ट्रीय संस्थानों से एम.ओ.यू. और अनुसंधान कार्यों को भी पेटेंट करवाया जाएगा। इसके बाद इन प्रयोगशालाओं की उपयोगिता अनुसंधान कार्यों में बढेगी। 15 जनवरी को कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित 15वीं अकादमिक परिषद् की बैठक में इस आशय का निर्णय किया गया। कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि प्रयोगशाला में जांच कार्यों का दायरा बढ़ने से शुद्ध दूध और गुणवत्तायुक्त पशुआहार और चारा निर्माण तथा अनुसंधान को प्रोत्साहन मिलेगा। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के जनोपयोगी शोध कार्यों का पेटेंट करवाने की कार्यवाही शुरू की गई है। कौंसिल की गत बैठक की कार्यवाही का अनुमोदन किया गया। अकादमिक परिषद् सदस्य प्रो. आर.के. बघेरवाल महू (म.प्र) और डॉ. रवीन्द्र शर्मा (हिसार) ने राजुवास द्वारा अर्जित उपलब्धियों और प्रतिष्ठा की सराहना की। कुलसचिव अजीत सिंह राजावत, वित्त नियंत्रक अरविंद बिश्नोई, तीनों महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर, विभागाध्यक्ष और अन्य अधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 6, 8, 9, 10 एवं 21 जनवरी को गांव पण्डरेउताल, रामपुरा, देंगा, रूपलीसर एवं भैंसली गांवों में तथा दिनांक 24 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 154 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 4, 6, 8, 10, 13 एवं 24 जनवरी को गांव 10 टीके रायसिंहनगर, बुदरवाली, कोहनी, ख्यालीवाला, भोजवाला एवं 23 बीबी पदमपुरा गांवो में एक दिवसीय तथा 14–15 जनवरी को दो दिवसीय एवं 21 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 241 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7, 9 एवं 16 जनवरी को गांव पानिया, बुजा एवं केसुआ गांवो में तथा 21 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 103 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा दिनांक 20 जनवरी को केन्द्र परिसर में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 12 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 7, 13, 15, 18 एवं 20 जनवरी को गांव सालेडा फला, करमेला, बागदरी, भुवाली एवं बारों का शेर गांवों में तथा दिनांक 24 एवं 25 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 204 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 8, 10 एवं 18 जनवरी को गांव निगौही, दिबली एवं कैमासी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 40 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 15, 16, 17 एवं 18 जनवरी को गांव इन्दोकिया, कुहाडा, हमीरपुर एवं हरभगतपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 89 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 6, 8, 14, 16 एवं 18 जनवरी को गांव कोलायत, करनीसर, ढाणी लक्ष्मीनारायण, पलाना एवं कालू गांवों में तथा 23 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 164 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 7, 13 एवं 20 जनवरी को गांव डूंगरज्या, खेडली तंवरान एवं सुल्तानपुर गांवो में तथा 27 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 92 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 7, 16 एवं 24 जनवरी को गांव टोरनिया, लक्ष्मीपुरा एवं गीतावास गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 79 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 14, 21 एवं 23 जनवरी को गांव भूरापुरा, जागीरदारपुरा एवं केलारी गांवों में तथा 25 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 119 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 13, 15, 16 एवं 17 जनवरी को गांव भोजपुरा, घूघरा, जाटली एवं हटून्डी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 108 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 7 एवं 9 जनवरी को गांव जूर एवं देसूरिया गांवों में तथा 17 एंव 20 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 87 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी झुंझुनूं द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 17, 21 एवं 22 जनवरी को गांव कसेरू, केरू एवं सुल्तानपुरा गांवों में तथा 15 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 116 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 14 एवं 16 जनवरी को गांव सरदारपुरा खालसा एवं करनपुरा गांवों में तथा 28 जनवरी को केन्द्र परिसर में प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 78 किसानों ने भाग लिया।

फरवरी माह में पशुओं की देखभाल

इस वर्ष काफी लम्बे समय से वातावरण का तापमान सामान्य से नीचा रहा है और पहाड़ी इलाकों में बहुत वर्षो के बाद काफी हिमपात हुआ है। फरवरी माह से मौसम में बदलाव शुरू हो जाता है और सर्दी का प्रभाव कम हो जाता है। लेकिन इस बदलते मौसम में पशुओं के विशेष रखरखाव की आवश्यकता होती है अन्यथा लापरवाही से पशु के बीमार होने की सम्भावना बहुत बढ़ जाती है। इस मौसम में पशुओं में बाह्य परजीवियों की समस्या विशेषरूप से देखने को मिलती है। बकरियों में इस समय जूं का व गाय, भैंस तथा ऊंट इत्यादि में चींचड का प्रभाव मुख्य रूप से होता है। इन बाह्य परजीवियों से पशु में खून की कमी, खुजली की वजह से चिड़चिडापन व दूध तथा मांस उत्पादन में कमी होती है जिसकी वजह से पशुपालक को अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। इसके साथ ही बाह्य परजीवी कई प्रकार की विषाणुजनित व रक्त परजीवी जनित बीमारियों के संवाहक भी होते हैं। अतः पशुपालकों द्वारा इस मौसम में अपने पशुओं का प्रबंधन निम्न प्रकार से करना चाहिए :

1. इस मौसम में पशुओं को दिन के समय बाहर धूप में बांधे अथवा बाड़े में खुला छोड़ दें।
2. रात के समय पशुओं को छप्पर के नीचे अथवा पशुघर में रखें।
3. बाह्य परजीवियों से बचाने के लिए चिकित्सक की सलाह के अनुसार दवा का प्रयोग करें। पशुपालक यह अवश्य ध्यान रखें कि इस तरह की अधिकांश दवाईयां जहरीली होती है। अतः आवश्यक मात्रा से ज्यादा प्रयोग न करें।
4. आने वाले महिनों में कुछ बीमारियां जैसे– खुरपका, मुंहपका, लंगड़ा बुखार, फड़किया इत्यादि सामान्यतः पशुओं को प्रभावित करते है। अतः समय रहते अपने पशुओं का टीकाकरण करवा कर इन संभावित बीमारियों से बचायें।
5. पशुघर व बाड़े के आसपास साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

नवजात बछड़े-बछड़ियों का स्वास्थ्य प्रबन्धन

यह बात जानने योग्य है कि किसी भी पशुपालक को डेयरी व्यवसाय में तभी फायदा हो सकता है जब उसके सभी पशु हष्ट–पुष्ट होंगे। उसके लिए यह आवश्यक है कि बछड़े–बछड़ी स्वस्थ रहे चूंकि यही बछड़े–बछड़ी डेयरी फार्म का भविष्य होते है। नवजात के पैदा होते ही निम्न स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं–

- शारीरिक तापमान का सामान्य से कम होना
- सांस लेने में दिक्कत
- नवजात का सुस्त होना, सक्रिय नहीं दिखना
- खून में ग्लुकोज की मात्रा में कमी
- खीस का न पी पाना

उपरोक्त समस्याओं से निजात पाने के लिए पशुपालकों को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- बछड़ों–बछड़ियों के शरीर का तापमान पैदा होने के तुरन्त बाद थर्मामीटर से नापना चाहिए। यदि यह 102^0F के आस–पास रहता है तो ठीक है, परन्तु कई बार यह तापमान गिरने लगता है। इससे बचने के लिए नवजात को अच्छे कपड़े से पोंछ कर किसी गर्म जगह पर रखना चाहिए।
- जिस स्थान पर गाय का प्रसव हो रहा है, वह स्थान सूख, स्वच्छ, हवादार तथा आरामदायक होना चाहिए।
- यह स्थान गर्मी में बहुत ज्यादा गर्म और सर्दी में बहुत ज्यादा ठंडा नहीं होना चाहिए।
- बछड़े–बछड़ी के जन्म के तुरन्त बाद शरीर के ऊपर की झिल्ली हटा दें, विशेष तौर पर नाक व मुंह के चारों तरफ की झिल्ली हटायें जिससे कि उसे पूरी तरह से श्वास ले सके।
- गाय को बछड़े–बछड़ी का शरीर जीभ से साफ करने दें, गाय के चाटने से बछड़े–बछड़ी का शरीर सूखने लगता है व नवजात का शरीरिक तापमान सामान्य होने में मदद मिलती है। जिससे बछड़ा–बछड़ी शीत–तापकता में नहीं जाता। त्वचा साफ हो जाती है तथा रक्त परिसंचरण भी सुचारू हो जाता है।
- बछड़े–बछड़ी को जन्म के 1–2 घंटे के भीतर खीस पिलायें, इसी दौरान पिलाया गया खीस बछड़े की रोग–प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इसमें बिल्कुल भी देरी न करें। कुछ पशुपालक भाई जेर गिरने का इन्तजार करते हैं, जो सही नहीं है। बछड़े को अगर समय रहते खीस न पिलाया जाए तो जो प्राकृतिक रोग प्रतिरोधक क्षमता उसको जीवन भर बिमारियों से लड़ने के लिए प्राप्त होती है, उससे वो वंचित रह जाता है।
- बछड़े–बछड़ी को उसके वजन के हिसाब से ही दूध पिलाएं, जो कि लगभग शरीर के वजन का 10 प्रतिशत होता है।
- इस बात का ध्यान रखें कि बछड़े–बछड़ी ब्याहने के कुछ समय बाद पहला काला मल भी उत्सर्जित कर देवें।
- जन्म के तुरन्त बाद बछड़े–बछड़ी को साफ, स्वच्छ जगह पर रखें चूंकि दूषित वातावरण में संक्रमण की संभावना रहती है, अतः उससे बचें।
- अगर बछड़े–बछड़ी को जन्म के तुरन्त बाद श्वास लेने में कठिनाई हो तो छाती को दबाकर कृत्रिम श्वास देने का प्रयत्न करें। धीरे–धीरे बछड़ा श्वास लेने लगेगा।
- बछड़े के जन्म के तुरन्त बाद वजन तौलें व उसको समय समय पर तौलते रहे।
- बछड़े–बछड़ी ब्याहने के एक डेढ़ घंटे में खड़ा होकर दूध पीने लगता है। अगर कमजोरी की वजह से न कर पाये तो बछड़े–बछड़ी की दूध पान करने में मदद करें, जल्दी ही वह पूरी तरह खड़ा होने लगेगा।
- जन्म के तुरन्त बाद बछड़े–बछड़ी की नाभि को शरीर से 5 सेमी. नीचे धागे से मजबूती से बांधे और बांधने के बाद पीछे से साफ ब्लेड या कैंची से काट देवें। इसके बाद कटी हुई नाभि पर टींचर आयोडीन लगा दें।
- कभी–कभी बछड़े–बछड़ी जन्म के बाद ग्लूकोज की कमी का भी शिकार हो जाते है, परन्तु यह समस्या पहला दूध यानि खीस पिलाते ही दूर हो जाती है।
- मादा के थन दूध पिलाने से पूर्व भी साफ पानी से धोकर सुखा लें तथा बाद में भी साफ कर लें।
- बछड़े–बछड़ी को जन्म के 10 दिन बाद कृमिनाशक घोल अवश्य देवें, जो कि उसके पेट के कीड़े साफ कर सकें तथा ये घोल 21 दिन बाद पुनः पिलायें।
- कृमिनाशक पिलाना अत्यंत आवश्यक है। तभी बछड़े की अच्छी बढ़त होगी तथा स्वस्थ एवं हष्ट–पुष्ट रहेंगे।

अगर पशुपालक जन्म के तुरन्त बाद नवजात बछड़े–बछड़ी की देखभाल उपरोक्तानुसार करें तो वे बछड़े–बछड़ी को स्वस्थ रख सकते हैं। इसके अलावा नवजात पर विशेष ध्यान देने की जरूरत तीन माह तक होती है। तब तक विभिन्न बीमारियों के संक्रमण का खतरा बना रहता है। अगर इन संक्रमित बीमारियों की उचित रोकथाम की जाए तो काफी हद तक बछड़े–बछड़ियों की अकाल मृत्यु से निजात पाया जा सकता है। प्रत्येक बछड़े–बछड़ी को अलग से देखभाल करें न कि झुण्ड में रखकर, तथा पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर समय–समय पर विभिन्न बीमारियों की जांच तथा टीकाकरण अवश्य कराएं, जैसे कि मुंहपका, खुरपका, गलघोंटू, लंगड़ा बुखार इत्यादि बीमारियों के टीके समय–समय पर व पशुचिकित्सक की सलाह से लगवाते रहें। स्वस्थ पशुपालन का आधार बछड़े व बछड़ियों को स्वस्थ तथा बीमारियों से मुक्त रखें।

–डॉ. दीपिका गोकलानी
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

खीस–एक उत्तम पौष्टिक औषध

पौष्टिक–औषध (न्यूट्रास्यूटिकल), जो ''न्यूट्रिशन'' (पोषण) और ''फार्मास्यूटिकल'' (दवा/औषधि) शब्दों से मिलकर बना है, एक खाद्य या खाद्य उत्पाद है जो बीमारी की रोकथाम एवं उपचार सहित स्वास्थ्य एवं चिकित्सीय लाभ प्रदान करता है। 1980 के में दौरान जापान में आधुनिक न्यूट्रास्यूटिकल बाजार विकसित होने लगा। सम्पूर्ण एशिया में सदियों से लोक परंपरागत औषधि के रूप में प्रयोग की जा रही प्राकृतिक जड़ी–बूटियों और मसालों के विपरीत, आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ–साथ न्यूट्रास्यूटिकल उद्योग का विकास हुआ है। यह रासायनिक अवयव पौधे, भोजन और सूक्ष्मजैविक स्रोतों से प्राप्त होते हैं और दीर्घकालीन स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण औषधीय लाभ प्रदान करते हैं। इन पौष्टिक–औषधीय रसायनों के उदाहरण में प्रोबायोटिक्स, ऑक्सीकरण रोधी और फाइटोकेमिकल्स शामिल हैं। यह उत्पाद आम तौर पर पुरानी बीमारियों की रोकथाम करने, स्वास्थ्य में सुधार करने, उम्र बढ़ने की प्रक्रिया में विलंब करने और जीवन प्रत्याशा में वृद्धि करने का दावा करते हैं। कोलोस्ट्रम (खीस) भी इसी प्रकार का न्यूट्रास्यूटिकल है,

कोलोस्ट्रम क्या है ?: कोलोस्ट्रम वह तरल पदार्थ है जो गाय या भैंस बच्चे के जन्म के बाद 4–5 दिन तक पैदा करती है। यह पीले रंग का होता है, इसमें बहुत से इम्यून फैक्टर्स जैसे लैक्टोपेरॉक्सिडेज, साइटोकाइन, लाइसोजाइम, इम्मुनोग्लोबुलिंस, लैक्टोफेरिन, प्रोलिन युक्त पॉलीपेप्टाइड पाये जाते हं । ये तत्व मानव की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। इसमें विकास कारक तत्व (जैसे एपिडर्मल ग्रोथ फैक्टर, इंसुलिन ग्रोथ फैक्टर, फाइब्रोब्लास्ट ग्रोथ फैक्टर, प्लेटलेट ग्रोथ फैक्टर, विटामिन और खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं।

इम्यून फैक्टर्स का योगदान : कोलोस्ट्रम में पाए जाने वाले इम्मुनोग्लोबुलिंस, इम्यून फैक्टर्स नवजात शिशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। खीस में विशिष्ट रोग जनकों के लिए 20 से अधिक एंटीबॉडी पाई गई है। इम्मुनोग्लोबुलिंस वायरल संक्रमण, जीवाणु संक्रमण, एलर्जी, कवक और खमीर के उपचार और रोकथाम में एक बेहतर रक्षा प्रदान करते हैं। खीस में इम्मुनोग्लोबुलिंस की मात्रा दूध की तुलना में 100 गुणा ज्यादा पायी जाती है। लैक्टोफेरिन एंटी वायरल, जीवाणुरोधी, सूजन–संबंधी गतिविधियों की रोकथाम में अहम भूमिका निभाता है । यह एक लौह बाध्यकारी प्रोटीन है। खीस में इसकी मात्रा दूध की तुलना में 15–50 गुणा ज्यादा पाई जाती है। कैंसर, एचआईवी, दाद, जीर्ण थकान, कैंडिडा एल्बीकैंस और अन्य प्रकार के संक्रमण के इलाज में यह बहुत उपयोगी पाया गया है। लैक्टोपेरॉक्सिडेज खीस में एक प्रमुख जीवाणुरोधी एंजाइम है। कई मामलों में इसका उपयोग दूध को बचाने के लिए भी किया जाता है। यह हाइड्रोजन पेरोक्साइड की उपस्थिति में थियोसाइनेट के ऑक्सीकरण को उत्प्रेरित करता है, जिसके कारण यह ग्राम पॉजिटिव और ग्राम नकारात्मक जीवाणु जैसे कि स्यूडोमोनास एरुजिनोसा, साल्मोनेला टाइफिमुरियम, लिस्टरिया मोनोसाइटोजेन्स, स्ट्रेप्टोकोकस म्यूटन्स, स्टेफाइलोकोकस ऑरियस के लिए घातक साबित हुआ है। कोलोस्ट्रम में इसकी मात्रा दूध की तुलना में 2–2.5 गुणा ज्यादा होती है। लाइसोजाइम एक प्रसिद्ध जीवाणुरोधी और लाइटिक एंजाइम है जो कि कई स्तनधारियों के शारीरिक तरल पदार्थ में पाई जाती है। खीस में लाइसोजाइम की सांद्रता सामान्य दूध से 10 गुणा ज्यादा होती है। लैक्टोफेरिन की उपस्थिति में लाइसोजाइम की जीवाणु रोधी गतिविधि बढ़ जाती है।

विकास कारक तत्व के फायदे : विकास कारकों में शरीर के विभिन्न सेल लाइनों के विकास की क्षमता पाई गई है। विकास कारक घटकों की सांद्रता विभिन्न प्रजातियों में अलग अलग पाई गई है, उदाहरण के लिए मानव खीस में एपिडर्मल ग्रोथ फैक्टर की सांद्रता गाय के खीस के अपेक्षा ज्यादा पाई जाती है और इंसुलिन ग्रोथ फैक्टर की सांद्रता गाय के खीस में ज्यादा होती है। विकास कारकों में उम्र बढ़ने के संकेतों को धीमा करने की शक्ति पाई गई है। फाइब्रोब्लास्ट ग्रोथ फैक्टर मांसपेशी और हड्डी सेल प्रसार और विकास को उत्तेजित करता है। गाय के खीस में इंसुलिन ग्रोथ फैक्टर की सांद्रता मानव खीस की तुलना में 30 गुणा अधिक होती है। यह रक्त में शर्करा और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को उपयुक्त बनाये रखता है। खीस में विटामिन और खनिज पोषक तत्व पाए जाते हैं जो शरीर के सामान्य विकास के लिए आवश्यक हैं।

कोलोस्ट्रम से सेहत के लिए फायदे

- **उत्तम एंटीऑक्सीडेंट**– ग्लूटाथिओन से सम्पन्न यह एक प्रबल एंटीऑक्सीडेंट है, जो बीमारियों के रोकथाम में अहम भूमिका निभाता है और मांसपेशियों को बल प्रदान करता है।
- **स्मरण शक्ति में वृद्धि**– खीस में फॉस्फोलिपिड्स पाये जाते है जो मस्तिष्क के कार्य को बढ़ाने में मदद करते हैं। यह अवसाद के लक्षणों को कम करता है।
- **मधुमेह में लाभदायक**– खीस में इंसुलिन ग्रोथ फैक्टर मौजूद होते हैं, जो ग्लूकोज के उपयोग को उत्तेजित करते है, जिस कारण से रक्त में ग्लूकोस की मात्रा संतुलित रहती है।
- **हृदय रोग**– खीस के पीआरपी हृदय रोग की संभावना को कम कर देते हैं। इसमें मौजूद विकास कारक एवं इंसुलिन ग्रोथ फैक्टर रक्त में एल डी एल – कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम और एच डी एल – कोलेस्ट्रॉल की वृद्धि करता है।
- **कैंसर**– खीस में पाए गए साइटोकाइन्स कैंसर के इलाज में उपयोगी हैं। खीस लैक्टलबुमिन कैंसर कोशिकाओं को समाप्त कर देता है, जिससे आस–पास के गैर–कैंसर वाले ऊतक अप्रभावित और सामान्य रहते हैं।
- **आंत का स्वास्थ्य**– कोलोस्ट्रम के वृद्धि कारक तत्व आंत पारगम्यता, सूजन, गैस्ट्रिक अप्सेट, उच्च रक्तचाप, पानी और नमक अवधारण और पेप्टिक अल्सर जैसे रोगों के रोकथाम में सहायक है। पेट के लिए लाभदायक बैक्टीरिया के विकास को प्रोत्साहित करता है और खतरनाक बैक्टीरिया को नष्ट करता है।

आज कल बहुत कंपनियों ने खीस और खीस से निर्मित उत्पादनों का व्यवसाय शुरू किया है। यह सारे उत्पाद सरलता से मिल जाते हैं। यह उत्पाद विभिन्न प्रकार के हैं जैसे कोलोस्ट्रम चॉकलेट, कोलोस्ट्रम पाउडर, कोलोस्ट्रम कैप्सूल, कोलोस्ट्रम टेबलेट आदि। भारत में क्योर न्यूट्रास्यूटिकल, बीओस्ट्रोम नूट्रिटेच, हरबो न्यूट्रा, इशिता फार्मा, डॉ रेड्डी जैसी कंपनियों के कोलोस्ट्रम के पदार्थ उपलब्ध हैं। रसायन विज्ञान की सहायता से कोलोस्ट्रम की गुणवत्ता का भी अनुमान लगाया जा सकता है। इसमें लैक्टोफेरिन, लाइसोजाइम की मात्रा की जांच भी की जा सकती है। कोलोस्ट्रम की आसान उपलब्धता और इसके विभिन्न स्वास्थ्य लाभों को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि न्यूट्रास्यूटिकल के रूप में इसका उपयोग भारत जैसे विकासशील देश में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि लोगों की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार हो सके।

प्रो. बसन्त बैस, विभागाध्यक्ष,
एल.पी.टी., सीवीएएस, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–फरवरी, 2020

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, जोधपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू, सीकर, उदयपुर, पाली, सिरोही, जैसलमेर
चेचक/माता रोग	भेड़, ऊँट, बकरी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सिरोही, जैसलमेर, कोटा, बूंदी, पाली
खुरपका–मुँहपका रोग	गाय, भैंस,बकरी, भेड़	दौसा, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, अलवर, बारां, भरतपुर, श्रीगंगानगर, नागौर, सीकर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, टोंक, जोधपुर, जैसलमेर, पाली
लंगड़ा बुखार/ठप्पा रोग	गाय	चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, सीकर, बीकानेर
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर, चित्तौडगढ, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा, दौसा, टोंक, सीकर, जैसलमेर, झालावाड़
न्यूमोनिक पाश्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस	सीकर, नागौर, अलवर, झुन्झुनु, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, जयपुर, हनुमानगढ़
प्लूरोन्यूमोनिया	बकरी	सीकर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर
सर्रा (तिबरसा)	भैंस, ऊंट	धौलपुर, श्रीगंगानगर, भरतपुर, हनुमानगढ़, कोटा, सीकर, डूंगरपुर, बारां
अन्तः परजीवी (एम्फीस्टोमीयेसिस, फेसियोलियेसिस)	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, उदयपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, बूंदी, झालावाड़
रानीखेत रोग (Ranikhet disease)	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्सीयस ब्रोंकाइटिस (Infectious Bronchitis)	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

सूअर पालन को आय का जरिया बनाया भवानीसिंह ने

बीकानेर जिले के ग्राम काकड़वाला तहसील लूनकरणसर के जागरूक एवं प्रगतिशील पशुपालक भवानीसिंह साधारण परिवार से सबंध रखते है। इन्होंने वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर के सम्पर्क में रहकर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से प्रेरित होकर स्वंय का व्यवसाय प्रारम्भ किया। उन्होनें 6 मादा एवं एक नर सूअर नोहर (हनुमानगढ़) से क्रय करके स्वंय का व्यवसाय प्रारम्भ किया। समय समय पर वी.यू.टी.आर.सी लूनकरणसर से निःशुल्क सूअर पालन का प्रशिक्षण एवं पशुचिकित्सा सेवाओं का लाभ लिया जिससे सूअर फॉर्म ने दिनों दिन उन्नति की ओर अग्रसर रहा। केन्द्र की पशुचिकित्सा सेवाओं से लाभ लेते हुए समय पर कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण, संतुलित आहार, टीकाकरण आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की। भवानीसिंह ने वीयूटीआरसी लूनकरणसर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर सूअर पालन, प्रबंधन, आहार, संक्रामक रोगों के बारे में जानकारी लेकर इन तकनीकों को अपने सूअर फॉर्म पर अपनाया जिससे आज इनके फॉर्म पर लगभग 16 मादा, 4 नर एवं 50 छोटे बच्चे उपलब्ध हैं। सूअर फॉर्म से पचास हजार रू. प्रतिमाह की आय प्राप्त कर रहे है। सूअर फॉर्म पर सूअरों के रखरखाव, पोषण, टीकाकरण, साफ–सफाई, कृमिनाशक दवा पिलाने का काम स्वंय करते हैं। फॉर्म के पास ही पानी के लिए डिग्गी उपलब्ध है। भवानीसिंह को नौकरी नहीं कर पाने का अफसोस नहीं है और वे अपने इस व्यवसाय को और ऊंचाई पर ले जाने को अग्रसर है। इन्होनें केन्द्र के मार्गदर्शन में खुद कामयाबी हासिल कर क्षेत्र के पशुपालकों एवं बेरोजगार युवाओं के लिए रोल मॉडल तैयार किया है जिसे देखकर अन्य लोग भी सूअर पालन के लिए प्रेरित हो रहे हैं। **भवानीसिंह, काकड़वाला, लूनकरनसर (मो. 8949796022)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

पशुओं के आहार में खनिज लवण आवश्यक रूप से शामिल करें

प्रिय, किसान और पशुपालक भाइयों और बहनों !

पशुओं के उत्तम स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक आहार में विटामिन और खनिज लवणों का विशेष महत्व होता है। पशुपालक इस ओर कम ध्यान देते हैं जिसके परिणाम स्वरूप पशुओं का शारीरिक विकास और उत्पादन क्षमता में कमी हो जाती है। संतुलित पशु आहार में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और वसा के साथ–साथ अपेक्षाकृत कम मात्रा में विटामिन और खनिज तत्व महत्वपूर्ण होते हैं। हमारे यहां खिलाए जाने वाले दाने और चारे में खनिज लवणों की मात्रा सामान्य से भी कम होती है अतः उनमें अतिक्ति उपाय करके देने की जरूरत रहती है। खेतों में उगने वाले चारे में रासायनिक खादों और अन्य कारणों से खनिज तत्वों की लगातार कमी हो रही है। खनिज मिश्रण में सभी खनिज तत्व आवश्यक मात्रा में उपलब्ध होते हैं। महत्वपूर्ण खनिज तत्वों में कैल्सियम दुग्ध उत्पादन के लिए जरूरी है तथा हड्डियों व दांतों को मजबूती प्रदान करके मांस पेशियों को लचीला बनाता है। जस्ता (जिंक) तत्व यौन अंगों का विकास करके विटामिन–ए को सक्रिय करता है जिससे आंखों के रंतौंधी रोग से बचाव होता है। मेंगनीज कार्बोहाइड्रेट के शरीर में प्रयोग होने में सहायक बनकर वसीय अम्ल का निर्माण के लिए आवश्यक है। आयोडीन पशुओं के प्रजनन तथा विकास के लिए जरूरी है। फॉस्फोरस दुग्ध उत्पादन के लिए अनिवार्य और हड्डियों व दांतों के निर्माण में सहायक है। मैग्नीशियम कॉर्बोहाइड्रेट तथा लिपिड्स के पाचन और अवशोषण तथा प्रोटीन के निर्माण में सहायक है। सल्फर भी प्रोटीन निर्माण में सहायक होता है। आयरन से शरीर की सभी क्रियाओं को ऊर्जा मिलती है। तांबे का उपयोग हिमोग्लोबिन निर्माण और प्रजनन कार्यों के लिए आवश्यक है। कोबाल्ट हिमोग्लोबिन निर्माण और प्रथम आमाशय (रूमेन) के जीवाणुओं द्वारा विटामिन बी–12 के निर्माण के लिए जरूरी है। खनिज मिश्रण खिलाने से शारीरिक और प्रजनन क्षमता में वृद्धि होती है और विभिन्न बीमारियों से बचाव भी होता है। खनिज मिश्रण को दाना या बांटा में मिलाकर खिलाना चाहिए। बछड़ा–बछड़ी, भेड़, बकरी के लिए 5 से 10 ग्राम प्रति पशु प्रतिदिन (आयु के अनुसार) और बड़े पशुओं जैसे गाय, भैंस, ऊंट आदि के लिए 50 से 100 ग्राम प्रति पशु प्रतिदिन (भार के अनुसार) दिया जाना चाहिए।

–प्रो.(डॉ.)अकबर अली गौरी, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414431098

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **फरवरी 2020** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
डॉ. दीपिका गोकलानी **9413684447** पशु औषधि विभाग, सीवीएएस., बीकानेर	पशुओं को उत्पादन रोगों सें कैसे बचायें।	06.02.2020
डॉ. नरेन्द्रसिंह राठौड़ **9799607070** जैव रसायन विज्ञान विभाग, सी.वी.ए.ए., बीकानेर	पशुओं में पशु आहार एवं पशु खनिज मिश्रण की निर्माण विधि और इनका महत्व	20.02.2020

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा
प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224